विवेकानन्द केंद्र इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर के स्थापना दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया का अभिभाषण

दिनांक 31 जनवरी 2024, बुधवार	**समय : 5.00 PM**	**स्थान : उजानबाजार, गुवाहाटी**

नमस्कार।

विवेकानन्द केन्द्र संस्कृति संस्थान, गुवाहाटी के स्थापना दिवस पर आयोजित समारोह में भाग लेना मेरे लिए सौभाग्य और गर्व के क्षण हैं। इस अवसर पर मैं संस्थान से जुड़े सभी पदाधिकारियों को अपनी ओर से हार्दिक बधाई देता हूँ। यह दिवस आपकी सक्रियता, समर्पण और प्रतिबद्धता का प्रतिफल है। संस्कृति संस्थान के संरक्षण एवं संवर्धन कार्यों से सम्बद्ध महानुभावों को सम्मानित करना उत्तर-पूर्व क्षेत्र के अन्य व्यक्तियों को भी संस्कृति के पोषण एवं संरक्षण की दिशा में प्रेरित करने का सद्प्रयास है।

मुझे यह जानकार प्रसन्नता हुई कि संस्थान द्वारा अपने उद्देश्यों के अनुसरण में स्थापना दिवस पर विगत में उत्तर-पूर्व क्षेत्र के विभिन्न समुदायों के 21 से अधिक विद्वानों को सम्मानित किया गया है।

देवियो और सज्जनो,

उत्तर-पूर्व क्षेत्र केवल आनंदादायक पर्यटन स्थलों, बेहतरीन हस्तकलाओं और यहां की विविध स्वरूपा संस्कृति से सम्बद्ध विषय नहीं है। प्रकृति की उदारता और यहां के लोगों की सादगी ने इस क्षेत्र की अपनी अलग पहचान बनाई है। अपनी अनूठी मेहमाननवाजी, प्राकृतिक सुंदरता, अनुकूल जलवायु और मनमोहक परिदृश्यों के लिए जाना जाने वाला यह क्षेत्र किसी परीकथा से अलग एक ऐसा क्षेत्र है, जहां की आबोहवा में जादुई प्रभाव छोड़ते बादल बसते हैं। उत्तर-पूर्व क्षेत्र के प्रदेशों ने एक ऐसी संस्कृति और पहचान विकसित की है, जो इसे शेष भारत से अलग करती है।

मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि हाल के वर्षों में क्षेत्र में विकास की दृष्टि से अनेक परियोजनाओं की शुरुआत हुई है, जो निश्चित रूप से उत्तर-पूर्व क्षेत्र और देश की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देगी और समावेशी और समग्र विकास की प्रक्रिया में सहायता करेगी।

प्रसन्नता की बात यह भी है कि केन्द्र सरकार पिछले कुछ समय से पूर्वोत्तर का समानांतर और संतुलित विकास सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी कदम उठा रही है। 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' नीति को हकीकत में बदलने पर मौजूदा सरकार की प्राथमिकता ने इस क्षेत्र के लिए आशा की किरण जगाई है।

मेघालय के मेंदीपाथर से असम के गुवाहाटी तक पहली बार ट्रेन चलाने, ओएनजीसी त्रिपुरा कंपनी लिमिटेड विद्युत प्लांट की यूनिट-2 की स्थापना, असम में देश का सबसे लम्बा (9.15 किलोमीटर) ढोला-सदिया पुल, गुवाहाटी में आईआईटी की आधारशिला का रखा जाना जैसी ऐतिहासिक पहल से पूर्वोत्तर के विकास की रफ्तार तेज हुई है।

समाज के सभी तबकों के विकास और पूर्वोत्तर को राष्ट्रीय विकास प्रक्रिया का हिस्सा बनाने की कोशिशों के जरिये यह सुनिश्चित किया गया है कि इस क्षेत्र के लोग कभी भी विकास या सांस्कृतिक दृष्टि से देश के बाकी हिस्सों के मुकाबले अलग नहीं माने जाएं।

पिछले कुछ दशकों में पूर्वोत्तर के संपूर्ण क्षेत्र में सड़क, रेल और हवाई संपर्क और दूरसंचार के क्षेत्र में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। पिछले दो दशकों में यहां कई नये विश्वविद्यालय, मेडिकल कॉलेज और इंजीनियरिंग कॉलेज स्थापित हुए हैं, जो एक सराहनीय कदम है।

देवियो और सज्जनो,

परम संतोष की बात है कि उत्तर-पूर्व क्षेत्र में पर्यटन संबंधी गतिविधियों के लिए बेहतरीन अवसर और संभावनाएं हैं। सरकार क्षेत्र के पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए यहां बुनियादी ढांचे के विकास के लिए कई परियोजनाएं लागू कर रही है।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि उत्तर पूर्व क्षेत्र की पर्यटन क्षमता के बारे में बातचीत करने और जागरूकता पैदा करने के लिए एक बड़ा मंच प्रदान किया जा रहा है। यह न केवल घरेलू, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय दर्शकों के लिए अद्वितीय पर्यटन उत्पादों, समृद्ध जैव विविधता और स्थानीय परंपराओं, नृत्य रूपों, कला, हस्तशिल्प और हथकरघा सहित अद्वितीय अमूर्त विरासत को उजागर करने में एक बड़ी मदद होगी।

पर्यटन के अलावा कृषि, सूचना प्रौद्योगिकी, बागवानी जैसे अन्य क्षेत्रों में भी उत्तर पूर्व में काफी संभावनाएं हैं। यह कहना सही होगा कि "पूर्वोदय" के बिना "भारत उदय" नहीं हो सकता।

सरकार नॉर्थ ईस्ट में कनेक्टिविटी, रोजगार और इंफ्रास्ट्रक्चर सुनिश्चित करने की दिशा में मिशन के रूप में काम कर रही है। हमारे लिए यह भी हर्ष की बात है कि सरकार उत्तर पूर्वी राज्यों को भारत के दक्षिण पूर्व एशिया के प्रवेश द्वार के रूप में देखती है।

देवियो और सज्जनो,

स्वामी विवेकानन्द के आदर्शों और विचारों के आधार पर कहा जा सकता है कि परहित के चिन्तन द्वारा जीवन को सरस, सुन्दर और करुणामय बनाने के लिए जो प्रयत्न किया जाता है उसी का परिणाम हमें संस्कृति के रूप में मिलता है। बहुआयामी संस्कृति ने हमें जीवन में पग-पग पर प्रेरणा प्रदान की है। संस्कृति ही है जो हमारी आत्मा को परिष्कृत कर दूसरों के उपकार के बदले उसे नम्र और विनयशील बनाती है।

कहना न होगा कि समन्वय और सामंजस्य ही संस्कृति की बुनियाद है। आज मनुष्य केवल अपने लिए नहीं जी सकता। यदि वह ऐसा करता है तो यह उसकी विकृति है। दूसरों से जुड़कर ही आदमी अपने को पहचानता है। दूसरों से जुड़ने के लिए उसे अपने अहम् का त्याग करना पड़ता है। आज खाने-पीने और रहने की समस्या इतनी नहीं है, जितनी कि आदमी के आदमी बने रहने की है। इस बात को समझना जरूरी है कि हर व्यक्ति हर दूसरे व्यक्ति के विकास के लिए उत्तरदायी है।

संस्कृति और संस्कारों के सान्निध्य में मनुष्य अपनी सृजनशील प्रतिभा का उपयोग केवल भौतिक सुख-सुविधाओं के लिए नहीं करता, बल्कि अपनी आन्तरिक चेतना को जागृत करने के लिए भी करता है। आज तक मनुष्य ने जितने भी आविष्कार किये हैं, वे केवल अपने हितसाधन के लिए नहीं, बल्कि सबके सुख-साधनों को ध्यान में रखते हुए किये हैं। आग और पहिये से लेकर भाप के इंजन और रेडियो तथा परमाणु ऊर्जा के अन्वेषण तक, खेती के आधुनिक साधनों से लेकर चिकित्सा के क्षेत्र में मनुष्य की प्राण रक्षा के साधनों तक हुए सभी आविष्कारों में मानव मात्र का कल्याण ही समाया हुआ है।

देवियो और सज्जनो,

जीवन में सत्कर्म, सद्व्यवहार और सदाचार को सर्वोपरि माना जाता है। दूसरों के दु:ख में दु:खी और सुख में सुखी दिव्य भाव रखने वाला ही सबका प्रिय होता है।

प्राचीन भारतीय संस्कृति के ये जीवन-सूत्र हजारों वर्षों बाद आज भी किसी-न-किसी रूप में विद्यमान हैं। वेद, उपनिषद, शास्त्र शिरोमणि गीता, रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य आज भी हमारे जीवन के आदर्श और प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं।

नैतिक एवं मानवीय मूल्यों के ह्रास के बावजूद भारतीय संस्कृति आज भी जीवंत है, जबकि विश्व की अन्य प्राचीन संस्कृतियाँ जैसे मिस्र, रोम, बेबीलोन, यूनान आदि लुप्तप्राय: हो गई हैं।

प्रसिद्ध शायर इकबाल ने इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए लिखा है -

यूनान मिस्र रोमां सब मिट गये जहां से ।
कुछ बात है जो हस्ती मिटती नहीं हमारी॥

भारतीय संस्कृति को जीवंत और अक्षुण्ण बनाये रखने वाली यह 'कुछ बात' उसका आध्यात्मिक तत्व ही है। यह आध्यात्मिकता ही हमारी प्राचीन संस्कृति का प्राणतत्त्व है। जीवन और अस्तित्व के सारतत्त्व के रूप में आत्मा-परमात्मा का चिन्तन और इनसे जुड़े हुए जीवन का निर्धारण इसकी मौलिक विशेषता है। वैदिक ऋषियों ने ही सर्वप्रथम 'आत्मा को जानो' का संदेश दिया था। उन्होंने सांसारिक सुख के बजाय आध्यात्मिक सुख को प्रमुखता और प्राथमिकता दी है।

स्वामी विवेकानन्द ने ठीक ही कहा है कि - "आध्यात्मिकता ही हमारा जीवन-रक्त है। यदि इसके बहाव में शक्ति, शुद्धता और ओज है तो सब कुछ सही है। यदि वह रक्त शुद्ध है तो राजनीतिक, सामाजिक या अन्य भौतिक दोष, यहाँ तक कि देश की दरिद्रता भी ठीक हो जायेगी। एक प्रयास होना चाहिए कि मनुष्य को शक्तिशाली बनाया जाये, जिससे कि रक्त शुद्ध हो, शरीर ऊर्जावान हो जिससे यह 'सभी बाहरी विषों' का निरोध करने और उनका निष्कासन करने में सक्षम हो सके।"

वेदांत का मूल हमें एकता और दिव्यता का संदेश देता है। ब्रह्मांड का प्रत्येक प्राणी, प्रत्येक कण दिव्य है और एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है। इसलिए, जब हम किसी गरीब व्यक्ति की सेवा और सहायता करते हैं, तो हम कोई दयालुता का कार्य नहीं कर रहे होते हैं। चूँकि हम एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, इसलिए जरूरतमंदों की मदद करना स्वयं की मदद करने के समान है।

देवियो और सज्जनो,

सेवा की अवधारणा के बारे में स्वामी विवेकानन्द कहते हैं कि यह सभी पूजाओं का सार है - शुद्ध होना और दूसरों का भला करना। जो गरीबों में, निर्बलों में और रोगियों में शिव को देखता है, वह वास्तव में शिव की पूजा करता है; और यदि वह शिव को केवल छवि में देखता है, तो उसकी पूजा प्रारंभिक है।

गरीबों की सेवा ईश्वर की पूजा के समान है। यह विचार भारतीय आध्यात्मिक चिंतन में गहराई से समाया हुआ है। स्वामी विवेकानन्द के विचार से यदि आप ईश्वर को पाना चाहते हैं, तो मनुष्य की सेवा करें। नारायण तक पहुँचने के लिए आपको दरिद्र नारायण की सेवा करनी होगी।

स्वामी विवेकानन्द ने यह भी कहा था कि - 'दूसरों का भला करने से ही स्वयं का भला होता है।' वे हम भारतीयों के लिए, विशेषकर युवाओं के लिए एक आदर्श हैं। उनका कहना था कि - 'भारत के राष्ट्रीय आदर्श त्याग और सेवा हैं...यदि आप ईश्वर को पाना चाहते हैं, तो मनुष्य की सेवा करें। ... 'व्यावहारिक देशभक्ति का अर्थ केवल मातृभूमि के प्रति प्रेम की भावना होना पर्याप्त नहीं है, बल्कि अपने देशवासियों की सेवा करने का जुनून है।'

उन्होंने प्रत्येक मनुष्य को, प्रत्येक राष्ट्र को महान बनाने का मार्ग दिखाया। संस्कृति संस्थान का स्थापना दिवस हमें विवेकानन्द के जीवन आदर्शों को आत्मसात करने को प्ररित करता है।

आधुनिक विश्व महान भौतिक उपलब्धियों से बदल गया है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की क्रांति ने विभिन्न क्षेत्रों में जबरदस्त कनेक्टिविटी ला दी है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति ने जीवन को आरामदायक बना दिया है। इसके बावजूद अध्यात्मवाद की कमी के कारण लोग आज अलगाव का अनुभव करते हैं।

अनियंत्रित होते मानसिक विकारों ने आदमी के अकेलेपन और अवसाद को बढ़ा दिया है। जलवायु परिवर्तन और उसके नकारात्मक परिणाम हमें प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर रहे हैं। संकीर्ण स्वार्थ हमारे भूमंडल को नष्ट कर रहे हैं।

ऐसे में प्रश्न उठता है कि इन विकृतियों पर कैसे काबू पाया जाए? इसका सीधा-सा उत्तर है कि हमें अपनी इच्छाओं पर लगाम लगानी होगी। लालच और स्वार्थ को नियंत्रित करना होगा।

निःस्वार्थता की शिक्षा को शैक्षिक पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग बनाना होगा। भारत के प्राचीन दर्शन को आज व्यावहारिक एवं समझने योग्य स्वरूप में प्रस्तुत करने की आवश्यकता है।

निःस्वार्थ सेवा ही अनेक समसामयिक समस्याओं का समाधान है। भारत में भी कई कॉलेज और अस्पताल परोपकार पर चलते हैं। शिक्षा के कुछ शीर्ष केंद्रों, जैसे हार्वर्ड या येल विश्वविद्यालयों को परोपकार के रूप में करोड़ों डॉलर प्राप्त होते हैं जिनका उपयोग शिक्षा को बढ़ावा देने में किया जा रहा है।

कहा गया है कि 'अपना सुधार ही संसार की सर्वश्रेष्ठ सेवा है' इस कथन के पालन से ही हम अपने आप पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। अध्यात्म विद्या का प्रथम सूत्र यही है कि प्रत्येक अच्छी-बुरी परिस्थिति का उत्तरदायी हम स्वयं को मानें। बाह्य समस्याओं का बीज अपने भीतर ढूंढें और जिस प्रकार का सुधार हम बाहरी घटनाओं, व्यक्तियों और परिस्थितियों में चाहते हैं, उसी के अनुरूप अपने गुण, कर्म, स्वभाव में परिवर्तन प्रारम्भ कर दें। मानव-कल्याण के लिए साधन न भी हों तो भी सेवा को स्वभाव का अंग होना चाहिए।

हमें व्यक्ति और समाज की आध्यात्मिक उन्नति के लिए निष्काम सेवा की वेदांतिक अवधारणा को पुनर्स्थापित करना चाहिए। रामकृष्ण मिशन और कई अन्य संगठन उपयोगी परहितकारी प्रेरणादायक व्यावहारिक कार्यों में लगे हुए हैं। भारत में अस्पताल, स्कूल, शैक्षिक कार्यक्रम, सामाजिक जागरूकता अभियान, कौशल निर्माण योजनाएं और कई तरह की गतिविधियां परोपकार और निःस्वार्थ सेवा के रूप में की जाती हैं जो अत्यंत सराहनीय हैं।

जब तक युवाओं में घर, स्कूल और कॉलेजों दोनों जगह छोटी उम्र से ही परोपकारी सेवा का आदर्श आत्मसात नहीं किया जाता, तब तक जरूरतमंदों की मदद करने की चुनौती हमेशा रहेगी। ऊर्जावान युवाओं में कुछ करने का जोश और जुनून होता है, लेकिन उन्हें भी दिशा-निर्देश और मार्गदर्शन की जरूरत है। जरूरी है कि उनमें बचपन से ही परोपकार की भावना विकसित की जाये।

सभ्यता और संस्कृति के सुदृढ़ सहारे ही मनुष्य निरन्तर विकास और प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता रहा है। प्रगति की दौड़ में मनुष्य का मन रुग्ण होता जा रहा है, जिससे उसका तनाव गहराता जा रहा है। मानव की रुग्ण मानसिकता की अभिव्यक्ति साम्प्रदायिक हिंसा, आतंक और अपराधों के रूप में होती है। संस्कृति के पौधे को पल्लवित-पुष्पित करने के लिए आज यह जरूरी है कि हम जीवन-मूल्यों के महत्त्व को समझें तथा अपने अहम् और अहंकार का परित्याग करें।

देवियो और सज्जनो,

आज हम अपनी आज़ादी के अमृतकाल के दौर से गुजरते हुए जश्न मना रहे हैं। ऐसे में उत्तर-पूर्व क्षेत्र को आर्थिक विकास का महत्वाकांक्षी केंद्र बनाने के उद्देश्य को भारत को एक विकसित देश बनाने के राष्ट्रीय लक्ष्य के साथ जोड़ सकते हैं।

इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य की प्राप्ति के मार्ग में चुनौतियां भी बहुत हैं, लेकिन मुझे यकीन है कि हम अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए बाधाओं को पार कर नई ऊंचाइयों को छूएंगे। नैतिक नेतृत्व, सही दिशा और कठिन परिश्रम से हम निश्चिय ही विश्व के लिए एक आदर्श राष्ट्र बनकर उभरेंगे।

अंत में, मैं आपके आतिथ्य और स्नेह के लिए आप सभी को धन्यवाद देता हूं और आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं।

धन्यवाद!

जय हिन्द!

जय भारत!